The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधो में मनोवैज्ञानिकता एवं भावात्मकता का विशेष अध्ययन

डॉ.आशीष कुमार तिवारी

सह. प्राध्यापक-हिंदी विभाग, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय,छतरपुर (मध्य प्रदेश)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120400

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 20-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

मनोवविश्लेषण, सम्पृक्त, लिबीडो, ग्रन्थि, हीनभावना, सांस्कृतिक बोध।

ABSTRACT

निबंध = नि+ बन्ध दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें 'नि' का अर्थ है नजदीक से और 'बन्ध' शब्द का अर्थ है - बांधना अर्थात् निबन्ध हिंदी गघ की एक ऐसी स्वतंत्र विधा है जिसमें निबंधकार अपने विचारों को विशिष्ट दृष्टि से प्रस्तुत करते है। सामान्य शब्दों में कहें तो निबन्ध गद्य की ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार अपने भावों एवं विचारों को सुसंगठित,व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से अर्थात वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करता है । हिंदी निबंध साहित्य के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान अविस्मरणीय है। भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों ने निबंध साहित्य को पूर्ण विकसित करने का प्रयास किया, लेकिन निबंधों में मनोवैज्ञानिकता का सन्निवेश आचार्य शुक्ल के द्वारा ही किया गया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ निबंधकार माने जाते हैं। उनके निबंधों में विचारात्मक एवं भावात्मक शैली स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं यदि यह कहा जाए कि वे सही अर्थों में आचार्य हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। शुक्ल जी अपनी मौलिक निबन्ध शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने हिन्दी में कई तरह के निबन्ध लिखे हैं परन्तु मनोवैज्ञानिक एवं वैचारिक निबन्धों के कारण उन्हें सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली।

प्रस्तावना:-

निबंध को गद्य की कसौटी माना जाता है, इसमें कलात्मकता और भावात्मकता दोनों ही अपेक्षित हैं। निबंध की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि एक ओर वह जहाँ यथार्थ भूत जीवन की व्याख्या करता है, वहाँ दूसरी ओर जीवन के निर्माण एवं उत्थान में भी सहायक होता है।

साहित्य और भाषा की प्रौढ़ता पर ही निबंध कला का उद्भव और विकास संभव है। पाश्चात्य विद्वानों ने विचार ,व्यक्तित्व, आत्मीयता और मुक्त प्रवाह को निबंध का विशेष गुण माना है। मान्तेन,जॉनसन,चार्ल्स लैंब,एडीसन आदि ने निबंध को इसी रूप में स्वीकार किया है ।

हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक और निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध को गद्य की कसौटी मानते हुए कहते हैं कि - ”आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व या व्यक्तिगत विशेषता हो।"1. इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब बिल्कुल नहीं कि उसकी प्रदर्शन के लिए विचारों की श्रृंखला रखी ही ना जाए या जानबूझकर जगह-जगह से तोड़ दी जाए। आगे वे कहते हैं- “निबंध लेखन में लेखक जिधर चलता है उधर अपनी संपूर्ण मानसिक सत्ता अर्थात बुद्धि और भावात्मक दोनों लिए होता है। आचार्य शुक्ल निबंध में हृदय के समन्वय भाव और क्रमबद्ध विचार पर बल देते हैं।”

2.निबंध को परिभाषित करते हुए बाबू गुलाब राय ने लिखा है कि-'निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता एवं सौष्ठव सजीवता के साथ ही संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो.”3. अर्थात निबंध गघ की वह स्वतंत्र विधा है जिसमें निजीपन और स्वच्छंदता जैसे मौलिक गुणों का होना अति आवश्यक है। निबंध वह स्वतंत्र विधा है जिसमें निजीपन और स्वच्छंदता जैसे मौलिक गुणों का होना अति आवश्यक है।

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल गद्य और निबंध के विकास का काल है। निबंधों से ही भाषा की शिथिलता और अयोग्यता दूर होती है, निबंधों में विषयों की अनेकरूपता तथा भाषा लाघव के कारण अर्थगत सूक्ष्मता के साथ-साथ शब्द भण्डार की वृद्धि होती है। जिस भाषा में निबंध साहित्य की जितनी विविधता और प्रचुरता होगी, उसकी क्षमता उतनी ही अधिक मानी जाएगी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी निबंध का सूत्रपात भारतेन्दु युग से स्वीकार किया है।

शोध विस्तार:-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के भावनात्मक निबंधों का संग्रह "चिंतामणि" में प्रकाशित है। यह निबंध संग्रह 1939 में प्रकाशित हुआ था। "चिंतामणि" में शुक्ल जी के कई महत्वपूर्ण निबंध संकलित किए गए हैं, जिनमें से कुछ भावनात्मक निबंध भी हैं, जैसे कि 'कविता क्या है?', 'उत्साह', 'लोभ और प्रीति'। इन निबंधों में आचार्य शुक्ल जी ने विभिन्न भावों जैसे उत्साह,श्रद्धा,भक्ति, लोभ,प्रीति,लज्जा,ग्लानि,करुणा आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। उन्होंने इन भावों को मानव जीवन के संदर्भ में समझाते हुए, उनके सामाजिक और व्यावहारिक महत्व पर प्रकाश डाला है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विषय के अनुरूप विभिन्न शैलियों को अपनाया है। शुक्ल जी ने अपने प्रसिद्ध निबन्ध करुणा में विषयानुसार उपयुक्त शैली तुलनात्मक शैली को अपनाया है। करुणा और क्रोध को एक दूसरे के विपरीत बताते हुए तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इस शैली से विषय गंम्भीर होते हुए भी आसानी से समझ में आ जाता है। तुलनात्मक विधि द्वारा दो विपरीत बिन्दुओं को अलग करके लेखक अपनी बात आसानी से स्पष्ट करने में सक्षम होता है। आचार्य शुक्ल इस में अत्यधिक सफल हुए हैं। समीक्षात्मक निबंधों में आपने कोरे शास्त्रवाद का समर्थन नहीं किया बल्कि सहृदयता एवं भावुकता के साथ-साथ निष्पक्षता भी उनके निबंधों का विशेष श्रृंगार करती है। शुक्ल जी ने मनोविकार सम्बन्धी निबंधों में मनोविज्ञान की आधुनिक खोजों के संग सांस्कृतिक बोध को भी स्थान दिया है।

शुक्ल जी के चिंतामणि में संकलित मनोविकार संबंधी निबंध अपनी वैचारिकी के कारण न केवल हिन्दी साहित्य अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में भी स्मरणीय रहेंगे। विद्वानों ने आचार्य शुक्ल के चिंतामणि में संकलित निबंधों को तीन श्रेणियों में विभाजित

किया है-भाव सबंधी निबंध, आलोचनात्मक निबंध, आलोचनात्मक प्रबंध आदि। शुक्ल जी के निबंधों को शास्त्रीय वर्गीकरण से अलग हट कर देखा जाए तो भी उनके निबंध अपना मापदण्ड स्वयं स्थापित करते हैं। शुक्ल के निबंध मनोविज्ञान की दृष्टि से पूर्ण होने के बाद भी पाश्चात्य जगत के कोरे मनोवविश्लेषणवाद के मानसिक व्यायाम नहीं है। ये भारतीय,सांस्कृतिक और साहित्यिक बोध सम्पृक्त हैं। शुक्ल जी के निबंधों की समीक्षात्मक स्वरूप को भी दो श्रेणियों से समझा जा सकता है- सैद्धांतिक समीक्षा और व्यावहारिक समीक्षा। उदाहरण स्वरूप 'कविता क्या हैं', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद' 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' और 'रसात्मक बोध' आदि। व्यावहारिक समीक्षा में 'भारतेन्दु हरिशचन्द्र', 'तुलसी का भक्ति मार्ग' और 'मानस की धर्मभूमि'। इन निवंथों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उन सभी बातों की व्याख्या को सरलता के साथ रूपायित किया है जिसमें सिद्धांत और कसौटियों के मध्य पाठक उलझ जाते हैं। इस सम्बन्ध में बाबू गुलाब राय लिखते है, "व्यावहारिक समीक्षा संबंधी निबंधों का उनके सैद्धांतिक निबंधों में समन्वयसिद्धता तथा मौलिक सिद्धांतों का सहारा लेकर विभिन्न प्रकार के संप्रत्ययों की सहआलोचना प्रस्तुत की गयी है, शुक्ल जी के ऐसे निबन्धों ने ही हिन्दी में विचारपरक, व्यवस्थित, सूक्ष्म और संयमित निबन्ध शैली को जन्म दिया।"4. 'चिंतामणि' आचार्य शुक्ल की निबंध 'चिंतामणि' आचार्य शुक्ल की निबंध कला का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके प्रथम दो भाग पहले प्रकाशित किये गए है। बाद में इसका तीसरा भाग भी प्रकाशित किया गया था।

चिंतामणि की भूमिका में स्वयं शुक्ल जी कहते हैं- "इस पुस्तक में मेरी अंतयात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती बुद्धि हृदय को साथ लेकर अपना रास्ता निकालती रही, जहाँ कही मार्मिक या भावार्षक स्थलों पर पहुंची है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता अपनी प्रवृति के अनुसार कुछ कहता गया।"5. अस्तु आचार्य शुक्ल जी के निबंधों की अन्तर्वस्तु से उनकी विश्लेषण बुद्धि का पूरा परिचय प्राप्त होता है। 'चिंतामणि' में संकलित सभी निबंध तथा अन्य निबंध विषय प्रधान हैं, साथ ही विश्लेषण परकता का प्रवाह भी स्पष्ट दृष्टव्य है। ऐसे दुरूह विषयों का साधारणीकरण बताता है कि शुक्ल जी मानों, जड़ को सींचना जानते हों। आचार्य के निबंधों के सम्बंध में डॉ रामविलास शर्मा जी लिखते है, "भाव संबंधी जो कुछ मनोवैज्ञानिक सामग्री शुक्ल जी को अध्ययन से मिली, उसका प्रयोग उन्होंने रस व्याख्या की दृष्टि से भाव निरूपण के संदर्भ में किया है।"6. रामचंद्र शुक्ल जी के विषय दुरूह होने के पश्चात् भी नीरस नहीं है। आवश्यकतानुसार मार्मिक और भावार्षक स्थलों पर उनकी कलम चुहलबाजी करती दिखाई देती हैं। कहीं व्यंग्य और कहीं विनोद उनके लेखन में सामंजस्य बनाकर चलता है। 'चिंतामणि' के किसी भी निबंध को देखते है तो उनका यह स्वरूप हर निबंध में मिल जाता है। 'लज्जा और ग्लानि' का उदाहरण प्रस्तुत है जो व्यंग्य और विनोद की प्रतीति कराता हुआ दिखाई देता है, "लज्जा मनोवेग के मारे लोग सिर ऊंचा नहीं करते, मुँह भी नहीं दिखाते, सामने नहीं आते और जाने क्या-क्या नहीं करते। हम बुरे न समझे जाएं, यह स्थायी भावना जिसमें जितनी अधिक होगी, वह व्यक्ति उतना ही लज्जाशील होगा। कोई बुरा कहें, या कोई भला कहे, इसकी परवाह करके जो काम किया करते है, वो ही निर्लज्ज कहलाते है।"7.

इसी प्रकार 'ईर्ष्या' निबंध में भी इसी तरह का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, "जैसे दूसरे के दुःख को देखकर, दुख होता है, वैसे ही दूसरे के सुख या भलाई को देखकर एक प्रकार का दुख होता है, इसे ईर्ष्या कहते हैं। 'ईर्ष्या' की उत्पति कई भावों के संयोग से होती है जैसे मेरी वस्तु दूसरे के काम ना आए, उसकी स्थिति मुझसे अच्छी न रहे, यही तो ईर्ष्या है।"8. शुक्ल जी के निबन्धों की अन्तर्वस्तु व्यक्ति प्रधान होने पर भी भाव शून्य नहीं है। व्यक्ति प्रधान इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि उनके निबंधों में

मौलिकता के पर्याप्त दर्शन होते हैं जो इनके व्यक्तित्व की छाप है। बुद्धि और हृदय का समुचित संयोग के साथ वैचारिक क्रमबद्धता का स्पष्ट प्रयोग किया हैं। इसके साथ संक्षेपण भी देखने को मिलता हैं, उदाहरण के लिए एक बानगी प्रस्तुत हैं "यदि लोभ की वस्तु ऐसी है जिससे सबको सुख और आनंद है तो उस पर जितना अधिक ध्यान रहेगा, रक्षा के भाव की एकता के कारण परस्पर मेल की उतनी ही प्रवृत्ति होगी।"9.शुक्ल जी के निबंध परिणत प्रज्ञा की उपज है। जिन पहलूओं का मानव जीवन से संबंध रहा है, उन्हीं के अनुरूप शुक्ल जी ने अपनी लेखनी चलाई है सामाजिक और मानवीय अर्थवता हेतु सृजन शुक्ल जी का उद्देश्य रहा है। उन्होंने अपनी प्रज्ञा का प्रयोग कर मानव जीवन पर गहन अनुसंधान किया और निष्कर्ष स्वरूप सृजन कर साहित्य के हेतु को प्राप्त किया। उनका मानना था कि साहित्य की सभी विधाएं श्रेष्ठ है परन्तु निबंध सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए तो यह तथ्य स्वीकार किया गया है-यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध पारदर्शी एवं सामाजिक मर्यादा का बोध कराते हैं, आदर्श और आस्थाओं का मूल स्वर है। उदाहरणों के माध्यम से विभिन्न तथ्यों का निरूपण हुआ है।

शैली की दृष्टि पर विचार किया जाए तो सबसे पूर्व भाषा की बात आती हैं शुद्ध खड़ी बोली, व्याकरण सम्मत है। सदैव विषय के अनूकूल एवं भावानुगामिनी दिखाई पड़ती हैं संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली का प्रयोग पाठक को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। यह केवल तत्सम शब्दावली की बात नहीं है, उर्दू-फारसी, देशी और दूसरे विदेशी शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। शुक्ल जी की निबंधावली की भाषा परिपक्व प्रतीत होती है। प्रौढ़ता, संयतता, परिष्कृत, सशक्त और व्यावहारिक स्वरूप इनकी भाषा के उदाहरण है। एक सामर्थ्यवान भाषा पर अधिकार होने के साथ शुक्ल जी ने अपनी भाषा में मुहावरे, लोक-उक्ति का सौष्ठव भी प्रयुक्त किया। वाक्य रचना सरल एवं शब्द योजना सटीक प्रतीत होती है। इससे भाषा में विषयानुकूल प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। कई स्थानों पर शुक्ल जी ने बड़े वाक्यों का भी प्रयोग किया है परन्तु विराम चिह्नों के प्रयोग से उनको भावयुक्त एवं बोध गम्य बना दिया है। शुक्ल जी के निबंध शास्त्रबद्ध न होकर मौलिक हैं। हां, यह अलग है कि शुक्ल जी का व्यक्तित्व भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र से प्रभावित है। अतः इस निबंध में प्रत्येक तथ्य को इन्होंने तर्कपूर्ण तरीके से कहा है। यहाँ आगमन पद्धति की तुलना में निगमन पद्धति का प्रयोग अधिक हुआ है। वे आरम्भ में सिद्धांत रूप में अपनी बात कहते हैं और उदाहरण देकर उस तथ्य को स्पष्ट करते है। समास शैली के प्रयोग के साथ सूत्र शैली उनके व्यक्तित्व की अन्यत्र विशेषता है, जो उनके निबंधों में बिखरी पड़ी है। कुछ विद्धान मानते हैं कि उनके निबंध का अभिव्यंजना पक्ष अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित है। यहां कहना होगा कि शुक्ल जी एक अच्छे लेखक होने के साथ-साथ अच्छे पाठक भी रहे है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन किया जो स्वभावतः उनके लेखन में आ गया।आचार्य शुक्ल चमत्कार उत्पन्न करने के लिए मौलिकता का समर्थन नहीं करते थे। उनकी मान्यताएं, उनका विषय - विवेचन, उनकी तर्क श्रृंखला , उनकी व्यंगोक्ति तथा उनके द्वारा जुटाए गए सरस साहित्यिक उदाहरण ही उनके निबंधों को मौलिक बनाते हैं। वैक्तियक्ता उनकी निबंध शैली की दूसरी विशेषता है। उन्हें अपनी मान्यताओं पर पूर्ण विश्वास था और उनका यह विश्वास उनके लेखन में झलकता है। उनके निबंध, किन्तु, परन्तु की दुविधापूर्ण शैली नहीं अपनाते बल्कि ऐसा ही है , ऐसा माना जाना चाहिए जैसे वाक्यों की विश्वास शैली में लिखे गए हैं। सुगठित परिभाषाएं, सूत्र शैली तथा अणुवाक्यों का प्रयोग उनके गहन चिंतन एवं आत्म विश्वास का सूचक है। उनकी निबंध शैली को समास शैली कहा जा सकता है। वे संक्षिप्तता के पक्षधर थे। उनके कुछ निबंध बहुत लम्बे हैं परन्तु वहां यह विस्तार विषय की व्यापकता का परिणाम है न कि शैली के बिखराव का।

निष्कर्ष

स्वरूप शुक्ल जी के निबंधों को लेकर संक्षेप में कहा जा सकता है कि निबंध के क्षेत्र में गूढ़ विवेचन और सूक्ष्म विश्लेषण को रूपायित करने का श्रेय स्वयं शुक्ल जी को ही है। विद्धानों ने माना है कि शुक्ल की शैली परिपाटी की न होकर वस्तुपरक रही है जो क्लिष्ट, जटिल, सरल तथा व्यावहारिक रही है। विषय गम्भीर है तो गम्भीरता आ गयी। विषय सरल है तो सरलता आ गई और विषय व्यवहारिक है तो व्यवहारिकता आ गयी। वस्तुतः अत्यंत संयत परिमार्जित, प्रौढ़ और मंजे हुए शुक्ल जी के विषय में यह सत्य है कि हृदय से कवि, मस्तिष्क से आलोचक और जीवन से अध्यापक, आचार्य रामचंद शुक्ल हिन्दी निबंध साहित्य रूपी आकाश के ज्योतिवान नक्षत्र है।

संदर्भ सूची :-

1.हिंदी साहित्य का इतिहास/आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ प्रभात प्रकाशन,दिल्ली/ पृष्ठ स-324.

2.हिंदी साहित्य का इतिहास/आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ प्रभात प्रकाशन,दिल्ली/ पृष्ठ स-326.

3.हिंदी साहित्य का इतिहास/ रामचंद्र शुक्ल/ प्रभात प्रकाशन,दिल्ली/पृष्ठ स-326.

4.आचार्य रामचंद्र शुक्ल/प्रदीप कुमार सिंह/ सरस्वती प्रकाशन, बम्बई/ पृष्ठ स-73.

5.'चिंतामणि' आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ इंडियन प्रैस इलाहाबाद/ पृष्ठ स-भूमिका

6.आलोचना के मान/ शिवदान सिंह चौहान/ स्वराज प्रकाशन, दिल्ली/ पृष्ठ स-73.

7 .'चिंतामणि' / आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ इंडियन प्रैस, इलाहाबाद/ पृष्ठ स-27.

8.चिंतामणि' / आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ इंडियन प्रैस, इलाहाबाद/ पृष्ठ स-32.

9.चिंतामणि' / आचार्य रामचंद्र शुक्ल/ इंडियन प्रैस, इलाहाबाद/ पृष्ठ स-37.